हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

11 यूथ कांग्रेस ने वितरित किए 600 पौधे

12 उमंग-उत्साह के साथ मनाया रक्षाबंधन

खबर संक्षेप

गांजे और स्मैक सहित दो आरोपी गिरफ्तार

बहादुरगढ़। स्थानीय पुलिस ने गांजे और स्मैक सहित दो आरोपी गिरफ्तार किए हैं। आरोपियों के खिलाफ लाइनपार और सिटी थाने में केस दर्ज किए गए हैं। पुलिस की एंटी नार्कोटिक सैल ने लाइनपार क्षेत्र में एक आरोपी को 171 ग्राम गांजे के साथ गुप्त सूचना के आधार पर पकड़ा। आरोपी की पहचान किशन राय के रूप में हुई है। मूलतः यूपी का किशन राय फिलहाल यहां छोटूराम नगर में रहता है। वहीं, दूसरे मामले में सीआईए टू ने बादली रोड स्थित भीमराव अंबेडकर स्टेडियम के पास नितिन निवासी आर्य नगर को काबू किया। उसके पास 6.12 ग्राम स्मैक बरामद हुई। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

ड्यूटी गया युवक लापता, केस दर्ज

बहादुरगढ़। घर से ड्यूटी के लिए निकला एक युवक लापता हो गया है। काफी तलाशने के बाद भी वह नहीं मिला तो परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। छुड़ानी के निवासी ओमप्रकाश का कहना है कि उसका पोता कपिल गांव में स्थित एक फैक्ट्री में काम करता है। शुक्रवार की सुबह वह ड्यूटी पर गया था। लेकिन वापस नहीं आया। बादली थाना पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

दो किलो से गांजे सहित युवक काबू, केस दर्ज

झज्जर। एसटीएफ की एक टीम द्वारा मादक पदार्थ गांजा सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। एसटीएफ प्रभारी राजेश कुमार ने बताया कि पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि संजीत गांजा बेचने का अवैध धंधा करता है। वह मोटरसाइकिल पर सवार होकर रोहतक की ओर से बस स्टैंड झज्जर होते हुए कच्चा बेरी रोड पर आएगा। जिस पर कार्रवाई करते हुए बस स्टैंड पर नाकाबंदी की गई। नाकाबंदी के दौरान शक की बिनाह पर एक मोटरसाइकिल सवार युवक को पकड़ा गया। पकड़े गए आरोपी की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके कब्जे से दो किलो बीस ग्राम नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। आरोपी की पहचान संजीत निवासी इंदिरा कॉलोनी रोहतक हाल भिवाड़ी घटाल कॉलोनी रोड राजस्थान के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार मामला दर्ज करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को पूछताछ के लिए एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

शराब व बीयर की खेप के साथ तस्कर गिरफ्तार

झज्जर। जिला पुलिस और आबकारी विभाग की संयुक्त टीम द्वारा अवैध शराब सहित एक आरोपी को पकड़ा गया है। थाना प्रभारी सदर निरीक्षक विनोद कुमार ने बताया कि थाना और आबकारी निरीक्षक नवीन कुमार की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए अवैध शराब सहित एक आरोपी को पकड़ा गया है। उन्होंने बताया कि पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि जतिन निवासी रोहतक अवैध शराब बेचने का काम करता है और गांव भदानी की मेन फिरनी पर कमरे में अवैध शराब बेच रहा हैं। जिस पर कार्रवाई करते हुए उप निरीक्षक रविंद्र कुमार और आबकारी निरीक्षक नवीन कुमार की पुलिस टीम मौके पर पहुंची। कमरे में बैठे व्यक्ति से पूछताछ करने पर उसकी पहचान जतिन निवासी रोहतक के तौर पर की गई। कमरे की चैकिंग करने पर अंग्रेजी शराब की 209 बोतल, देशी शराब की 24 बोतल व बीयर की 53 बोतल बरामद हुई।

जुए व सट्टे का विरोध करने पर सरपंच प्रतिनिधि को जान से मारने की धमकी

सांखोल के ग्रामीण नाराज असामाजिक तत्वों के खिलाफ पुलिस को दी शिकायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

इलाके में जुए, सट्टे का कारोबार फल फूल रहा है। इस गैर कानूनी धंधे से जुड़े लोगों के हौसले इतने बुलंद हैं कि उन्होंने गांव सांखोल के सरपंच प्रतिनिधि के साथ हाथापाई की और फोन पर जान से मारने की धमकी तक दे डाली। इस वारदात से गांव के लोगों में रोष है। वारदात से नाराज ग्रामीणों ने शनिवार को ग्रामीणों ने थाने में पहुंचकर पुलिस को शिकायत दी और जुआ, सट्टा खिलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग उठाई।

हाथापाई करने पर दो युवकों को पकड़ कर पुलिस को सौंपा

यह वारदात शुक्रवार की शाम को हुई। शिकायतकर्ता मास्टर राजकुमार का कहना है कि उनकी पत्नी गांव की सरपंच है। पत्नी के बीमार होने के चलते फिलहाल गांव के कामकाज व रखरखाव का काम वह खुद देख रहे हैं। शुक्रवार की शाम को देवीलाल पार्क के पास स्थित अपने आफिस में हम बैठे थे। इसी दौरान पता चला कि पार्क के सामने एक जगह पर कुछ लोग जुआ, सट्टा खिला रहे हैं। इस पर मैं व गांव के कुछ मौजिज लोग वहां गए तो उन्होंने हमारे साथ हाथापाई की। इसके बाद पुलिस को सूचना दी और दो लोगों को पकड़कर सौंप दिया।

बहादुरगढ़। थाने में पुलिस को शिकायत देते सरपंच प्रतिनिधि व ग्रामीण।

व्हाट्सएप कॉल कर जान से मारने की धमकी

कुछ ही देर में उनके 10-15 साथी आ गए। हमें धमकी देने लगे कि और प्रशासन को बदनाम करते हुए कहने लगे कि हम पैसे देते हैं। पुलिस की गाड़ी जाने के बाद कुछ लोग फिर वहां आए और बोले कि सरपंच कहां है। आफिस वालों ने बताया कि वह अपने घर चले गए। इसके बाद मेरे पास व्हाट्सएप कॉल आई और मुझे जान से मारने की धमकी दी। ये भी कहा कि तुम होते कौन हो हमें रोकने वाले, कल सुबह तुम्हारे पास बड़े बदमाश का फोन आएगा। इसी दौरान सूचना मिली कि मेरे आफिस के नजदीक मौजूद एक अन्य आफिस में मारपीट की गई है। आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। फिलहाल इस संबंध में केस दर्ज नहीं हो पाया है।

नेशनल में हरियाणा के तैराकों ने जीते सात मेडल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। कृष जैन।

जूनियर नेशनल तैराकी प्रतियोगिता में एक बार फिर से हरियाणा के तैराकों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है। हरियाणा के जूनियर तैराकों ने तीन गोल्ड, तीन सिल्वर और एक ब्रांज सहित कुल सात मेडल हासिल किए हैं। टीम की जीत पर खेल प्रेमियों ने खुशी जताई है।

हरियाणा तैराकी संघ के महासचिव अनिल खत्री ने बताया कि अहमदाबाद में तीन से सात अगस्त तक जूनियर नेशनल तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। हरियाणा के तैराक कृष जैन ने 100 और 200 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में गोल्ड, 100 मीटर बैक्स्ट्रोक में सिल्वर और 200 मीटर आईएम में ब्रांज मेडल हासिल किया है। वहीं, अर्जुन सिंह ने 50 मीटर बैक्स्ट्रोक में गोल्ड और 50 व 100 मीटर फ्री स्टाइल में सिलवर मेडल हासिल किया। अनिल खत्री ने विजेता तैराकों को मेडल टैली में हरियाणा का गौरव बढ़ाने के लिए बधाई दी।

उन्होंने कहा कि हरियाणा के तैराक लगातार नेशनल प्रतिस्पर्धा में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। अगली बार इससे ही ज्यादा मेडल जीतकर हरियाणा के तैराक लाएंगे।

साइबर सेल ने दो माह में ढूंढ निकाले गुम हुए 35 मोबाइल

झज्जर। फोन मिलने पर खुशी जताते लोग। साथ में हैं डीसीपी जसलीन कौर।

झज्जर। साइबर सेल की टीम द्वारा बीते दो माह में विभिन्न लोगों के गुम हुए 35 मोबाइल को ढूंढ कर उनके मालिकों को सौंप दिए। डीसीपी जसलीन कौर ने बताया कि साइबर सेल प्रभारी एएसआई देवेंद्र कुमार की टीम ने सुराग जुटा कर बीते दो माह मे आमजन के गुम हुए करीब 5 लाख रुपये कीमत के सीईआईआर पोर्टल से ट्रेस 35 मोबाइलों को ढूंढने क कार्य किया है। उन्होंने बताया कि मोबाइलों के मालिकों को कार्यालय में बुलाकर मोबाइल फोन सौंपे दिए गए। उन्होंने सीईआईआर पोर्टल के विषय में बताया कि भारत सरकार द्वारा चलाए गए इस पोर्टल की खासियत यह है कि इस पर शिकायत रजिस्टर्ड करने उपरांत मोबाइल का आईएमईआई ब्लॉक हो जाता है और मोबाइल ट्रेस होने उपरांत शिकायतकर्ता को सूचना दे दी जाती है।

लाइनपार से किशोरी और युवती लापता

बहादुरगढ़। लाइनपार थाना क्षेत्र में अलग-अलग स्थानों से दो लड़कियां संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई हैं। काफी तलाश करने के बाद भी कुछ सुराग नहीं मिला तो परिजनों ने पुलिस को सूचना देकर तलाश की गुहार लगाई है। पहला मामला निजामपुर रोड स्थित एक कॉलोनी का है। बिहार मूल के एक व्यक्ति ने कहा है कि उसकी 24 वर्षीय बेटी प्लास्टिक दाना फैक्ट्री में काम करती है। गत छह अगस्त की सुबह वह घर से ड्यूटी गई थी। लंच के समय वह कमरे पर आई लेकिन फिर दोपहर को कहीं चली गई। इसके बाद वापस नहीं आई। परिजनों ने रिश्तेदारों और परिचितों में काफी तलाश की, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। दूसरा मामला छोटूराम नगर का है। बिहार मूल के दिनेश का कहना है कि आठ अगस्त की सुबह उसकी 14 वर्षीय बेटी घर से बाहर गई थी। काफी देर बाद नहीं आई तो उसकी तलाश शुरू की लेकिन नहीं मिली। हो सकता है, किसी ने उसको अगवा कर लिया हो। इन शिकायतों पर लाइनपार थाने में मामले दर्ज हुए हैं। पुलिस मामलों की जांच कर रही है।

रक्षाबंधन पर जमकर बरसे बदरा शहर में कई जगह जलभराव

■ 32 एमएम बारिश दर्ज की गई, त्योहार पर मौसम रहा सुहाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

रक्षा बंधन के दिन इलाके में मौसम ने करवट ली और शनिवार की सुबह झमाझम बारिश हुई। दिनभर आसामान में बादल छाए रहे। दोपहर से शाम तक भी बूंदाबांदी का दौर चला। कुल मिलाकर 32 एमएम बारिश दर्ज की गई।

बारिश के चलते अधिकतम तापमान में शुक्रवार के मुकाबले करीब छह डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। शुक्रवार को जहां पारा 36 डिग्री सेल्सियस पर था, वहीं शनिवार को यह घटकर 30 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। लोगों को उमस और गर्मी से कुछ राहत मिली। तेज बारिश के कारण शहर की कई सड़कों और गलियों में पानी भर गया। जलभराव के बीच जगह-जगह सड़कों पर बने गड्ढों ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दीं। कुछ कॉलोनियों में घंटों तक जलभराव की स्थिति बनी रही, जिससे लोगों को आने-जाने में दिक्कतें हुई।

बारिश ने रक्षाबंधन के दिन बाजारों की रौनक भी फीकी कर दी। आमतौर पर त्योहार के दिन खरीदारों की अच्छी खासी भीड़ रहती है, लेकिन बारिश के चलते ग्राहक कम पहुंचे। दुकानदारों ने बताया कि रक्षाबंधन पर कई लोग आखिरी समय पर खरीदारी करते हैं, लेकिन बारिश की वजह से बिक्री पर असर पड़ा। हालांकि, मौसम में आए बदलाव ने लोगों के चेहरे पर मुस्कान भी ला दी। कई परिवारों ने बारिश के बीच त्योहार का आनंद लिया, वहीं बच्चों ने सड़कों और गलियों में जमा पानी में खेलकर दिन को यादगार बना दिया।

बहादुरगढ़। मांडोठी बाजार में हुआ जलभराव।

महर्षि दुर्वासा धाम में शाही स्नान के बाद बाल दंगल

■ कुश्ती लड़ने के लिए प्रदेश भर से पहुंचे पहलवान

झज्जर। कुश्ती शुरू करवाते आयोजक समिति सदस्य।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

रक्षा बंधन एवं सावन पूर्णिमा के उपलक्ष्य में बेरी के महर्षि दुर्वासा धाम में शाही स्नान व बाल कुश्ती दंगल का आयोजन किया गया। कुश्ती दंगल में बाल पहलवानों ने अपने दमखम का प्रदर्शन किया। महर्षि दुर्वासा सेवा समिति प्रधान एवं अखाड़ा संचालक ढीला पहलवान ने बताया कि ग्रामीणों के सहयोग से गांव के खेल स्टेडियम में एक नया कुश्ती अखाड़ा खोला गया है। इस अखाड़े में गांव के युवा रोजाना छोटे बच्चों को कुश्ती के दांव-पेंच सिखाते हैं। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी नशे की ओर बढ़ रही है, जो अत्यंत चिंताजनक है। इस पर अंकुश लगाने के लिए गांव की तीनों पंचायतों, सामाजिक संस्थाओं तथा प्रतिभाशाली युवाओं का निरंतर सहयोग मिल रहा है। बाल पहलवानों के लिए इनामी कुश्तियां कराई गई। इस मौके पर बाबा पूर्ण दास, जोगेंद्र, संदीप ठेकेदार, कालू पहलवान, बाबा टूटा सेवा समिति प्रधान रणबीर, पूर्व डीएसपी रामफल, सुभाष कादियान, संत पहलवान, मोनू कादियान, कोच नकुल व संजीत सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर डीएमआरसी ने सुरक्षा बढ़ाई

पीक आवर्स में भीड़भाड़ के चलते यात्रियों को हो सकती है देरी, अतिरिक्त समय लेकर स्टेशन पहुंचे यात्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

स्वतंत्रता दिवस पर सुरक्षा के मद्देनजर दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन भी अलर्ट है। शनिवार को डीएमआरसी की ओर से सभी स्टेशनों पर सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई। आगामी 16 अगस्त तक यह विशेष सुरक्षा व्यवस्था प्रभावी रहेगी।

बढ़ी हुई सुरक्षा व्यवस्था के चलते पीक आवर्स में मेट्रो स्टेशन पर यात्रियों की कतार लगेगी। इसलिए यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में अधिक समय लग सकता है। डीएमआरसी अधिकारियों ने कहा है कि यात्री अपनी यात्रा की योजना पहले से बनाएं। वे 16 अगस्त तक पर्याप्त समय यानी दस से 15 मिनट पहले घर से निकलें। साथ ही, स्टेशन पर प्रवेश के समय अपना सामान जांच के लिए तैयार रखें और केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों का सहयोग करें। दिल्ली मेट्रो के सभी प्रमुख और संवेदनशील स्टेशनों पर अतिरिक्त सुरक्षा कर्मी तैनात किए गए हैं।

बहादुरगढ़। शाम के वक्त मेट्रो में यात्रियों की भीड़।

संदिग्ध वस्तु की तुरंत सूचना दें

डीएमआरसी के अधिकारियों ने यात्रियों से आग्रह किया गया है कि वे किसी भी संदिग्ध वस्तु या गतिविधि की जानकारी तुरंत स्टेशन स्टाफ या सुरक्षा कर्मियों को दें। स्वतंत्रता दिवस के दौरान मेट्रो न केवल दिल्ली बल्कि नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरुग्राम और बहादुरगढ़ तक लाखों यात्रियों की यात्रा सुविधा सुनिश्चित करती है। ऐसे में यह सुरक्षा इंतजाम राजधानी और एनसीआर में शांति व सुरक्षा बनाए रखने में अहम भूमिका निभाएंगे। डीएमआरसी ने यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए अन्य इंतजाम भी किए है।

स्वतंत्रता दिवस पर जिले में अलर्ट, ड्रोन ग्लाइडर व पतंग उड़ाने पर प्रतिबंध

झज्जर। स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सुरक्षा के दृष्टिगत कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिले की राजस्व सीमा में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के तहत धारा 163 लागू की है। आदेशों के तहत जिले में 15 अगस्त मध्य रात्रि तक किसी भी प्रकार के ड्रोन, ग्लाईडर व पतंग उड़ाने पर पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया है। आदेशों की पालना सुनिश्चित करने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। जिलाधीश के आदेशों की अवहेलना करने पर भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान**: अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता**: अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन**: अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन**: जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी**: विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन**: वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण**: अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि**: निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी**: अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा**: यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण** : अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश** : नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, ₹अगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- **फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना**
- **अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे**
- **अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा**

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्च : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्च : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंगा। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट, भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कभी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

सैनी ने सीएम का आभार जताया

बहादुरगढ़। भाजपा नेता जसबीर सैनी ने मुख्यमंत्री नायब सैनी से मुलाकात की। सैनी ने सीएम का आभार जताते हुए कहा कि एक से 31 अगस्त तक चलाए जा रहे बेसहारा पशु मुक्त अभियान से आमजन को बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि सड़कों पर बेसहारा पशुओं के कारण होने वाले हादसे रुकेंगे। इस मौके पर उन्होंने सफाई, सड़क, स्वास्थ्य, बिजली, पानी और सीवर जैसी समस्याओं के समाधान की भी मांग रखी।

जिला स्तरीय वन महोत्सव कार्यक्रम कल

झज्जर। क्षेत्र के गांव मातनहेल स्थित केंद्रीय विद्यालय परिसर में सोमवार को 76 वां जिला स्तरीय वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। वन मंडल अधिकारी प्रवीण कुमार ने बताया कि जिला स्तरीय कार्यक्रम में हरियाणा के विकास एवं पंचायत, खनन एवं भू-विज्ञान मंत्री कृष्ण लाल पंवार बतौर मुख्यातिथि जबकि बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून विशिष्ठ शिरकत करेंगे। इस दौरान विकास एवं पंचायत मंत्री पौधारोपण कर अभियान का शुभारंभ करेंगे।

फसलों को पंजीकरण कराने की अंतिम तिथि 31

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि मेरी फसल-मेरा ब्योरा पोर्टल पर खरीफ फसलों के पंजीकरण की अंतिम तिथि को बढ़ा दिया गया है। अब किसान 31 अगस्त तक पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। उन्होंने जिले के किसानों से आहवान करते हुए कहा कि जो किसान अपने खेतों में खरीफ फसलों की बुआई कर चुके हैं। वे पोर्टल पर अपनी फसलों का पंजीकरण अवश्य करा लें।

विद्यार्थियों ने तिरंगा रैली से दिया एकता का संदेश

रेवाड़ी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय सुंदरोज के विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तिरंगा रैली का आयोजन किया। मौलिक मुख्य अध्यापिका कांता देवी ने रैली हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम प्रभारी विज्ञान अध्यापक महेश कुमार ने रैली का नेतृत्व किया। रैली में विद्यार्थियों व स्कूल स्टाफ ने तिरंगे हाथ में लेकर भारत माता की जय तथा वंदे मातरम के नारे लगाए। रैली के माध्यम से देश की एकता व अखंडता का संदेश दिया गया। मुख्य अध्यापिका ने कहा कि आजादी के पर्व को सभी को हर्षोल्लास से मनाना चाहिए। इस अवसर पर अध्यापक सुरेश कुमार, पवन सिंह व अजीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

आराधना से भगवान भोलेनाथ मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं

सावन के अंतिम दिन श्रद्धालुओं ने किया भगवान शिव का जलाभिषेक

■ भगवान शिव की आराधना के लिए सावन माह को सबसे उत्तम माना जाता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। भगवान शिव का जलाभिषेक करते हुए श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

सावन मास के अंतिम दिन शहर के शिवालयों और मंदिरों में श्रद्धालुओं ने शिवलिंग पर जलाभिषेक किया। सुबह से ही ओम नमो शिवाय, हर-हर महादेव के जयकारे लगाते हुए शिव भक्तों ने नगर खेड़ा बाबा प्रसाद गिरी मंदिर, प्राचीन खाटू श्याम मंदिर, चौपटा बाजार शिव मंदिर, चौरासी घंटे वाला मंदिर, बूढ़ा महादेव मंदिर, श्रीराम मंदिर, श्रीगोपाल मंदिर, श्रीलेखराज मंदिर, श्रीदुर्गा मंदिर, श्रीप्रेम मंदिर, बेरी गेट शिव मंदिर, आर्य नगर शिव मंदिर, दिल्ली गेट शिवालय, देवालय आश्रम, बाबा कांशीगिरी मंदिर, आनंद आश्रम सहित विभिन्न मंदिरों में गंगा जल, फल, फूल, शहद के साथ श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक किया। बाबा कांशीगिरी महाराज मंदिर के पुजारी पवन कौशिक ने कहा कि भगवान शिव की आराधना के लिए सावन माह को सबसे उत्तम माना जाता है। सावन भक्ति और तप का प्रतीक है। श्रद्धालु कठिन तप उपवास और नियमों का पालन कर भगवान शिव को प्रसन्न करते है। इस दौरान आराधना से भगवान भोलेनाथ मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। सावन में भगवान शिव के स्मरण मात्र से ही सभी मनोकामनाएं पूरी होती है।

आर्य समाज मंदिर में वैदिक यज्ञ आज

झज्जर। आर्य समाज द्वारा रविवार को वैदिक यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। आर्य समाज के महामंत्री लाला प्रकाशवीर आर्य ने बताया कि सुबह आठ बजे शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में ब्रह्मचारी इंद्रजीत यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शामिल होकर आर्यजनों द्वारा यज्ञ में आहुति डाली जाएगी।

झज्जर। प्रदर्शन में उपस्थित ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन कार्यकर्ता।

ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन ने किया विरोध प्रदर्शन

झज्जर। संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन द्वारा आगामी तेरह अगस्त को कॉर्पोरेट कृषि तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत छोड़ो दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन संगठन के कार्यकर्ताओं व समर्थकों द्वारा जिला मुख्यालय पर ट्रैक्टर मार्च व धरने प्रदर्शन का आयोजन कर केंद्र सरकार की किसान विरोधी नीतियों तथा अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के पुतले का दहन किया जाएगा। संगठन के प्रदेश कमेटी सदस्य करतार सिंह अच्छेज ने बताया कि विदेशी तथा देशी कंपनियों की नजर भारतीय कृषि बाजार तथा कृषि भूमि पर है। केंद्र सरकार नई कृषि मार्केटिंग पॉलिसी द्वारा देश के कृषि बाजार को निजी कंपनियों के हवाले करने जा रही है, जिसे देश के किसान मजदूर कभी सफल नहीं होने देंगे।

यूथ कांग्रेस ने वितरित किए 600 पौधे

■ सत्यवान गहलोत ने युवाओं को पौधे भेंट कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। पौधा वितरण कार्यक्रम में मौजूद कांग्रेस कार्यकर्ता व स्टेडियम में आने वाले युवा।

भारतीय युवा कांग्रेस के स्थापना दिवस पर बहादुरगढ़ में पौधा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। हरियाणा युवा कांग्रेस की टीम द्वारा अंबेडकर स्टेडियम में तुलसी के 600 पौधे वितरित किए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव व हरियाणा प्रभारी सत्यवान गहलोत ने युवाओं को पौधे भेंट कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। पत्रकारों से बातचीत में सत्यवान गहलोत ने बताया कि वोटों में धांधली के खिलाफ कांग्रेस 12 अगस्त को दिल्ली में प्रदर्शन करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बेरोजगारी के मुद्दे पर सरकार के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी। गहलोत ने बताया कि राजस्थान, दिल्ली और बिहार में जॉब मेले आयोजित कर युवाओं को रोजगार दिया गया है, और जल्द ही हरियाणा में भी ऐसे मेले लगाए जाएंगे। हरियाणा युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव प्रदीप यादव ने कहा कि बहादुरगढ़ एक औद्योगिक शहर होने के कारण यहां प्रदूषण अधिक है। ऐसे में स्वच्छ हवा के लिए सभी को अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनका संरक्षण करने की जरूरत है। इस अवसर पर कांग्रेस नेता वेद प्रधान, पंडित राजसिंह पहलवान, सुरेश राठी, कोच बिट्टू अहलावत, गजानंद गर्ग, पार्षद बलराम दलाल, पार्षद प्रतिनिधि संजीव मलिक, रविंद्र जाखड़, पप्पू यादव, दर्शन सैनी, प्रवीन मान, सत्येंद्र दहिया, राजेश कलशन, कृष्ण सैनी, झज्जर युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष प्रतिनिधि संदीप दहिया, हलका अध्यक्ष धर्मेंद्र राणा, शहरी ब्लॉक अध्यक्ष पंकज फोगाट, मांडोठी ब्लॉक अध्यक्ष सन्नी सैनी, नूना माजरा ब्लॉक अध्यक्ष पुरुषोत्तम जून सहित अन्य उपस्थित रहे।

गाली मुक्त समाज बनाने का संदेश दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। गालीमुक्त समाज का संदेश देते विभिन्न संस्थाओंसे जुड़े लोग।

संघर्षशील जनकल्याण सेवा समिति और शहर की कई अन्य सामाजिक संस्थाओं ने रक्षाबंधन के अवसर पर ज़बान संभाल के अभियान चलाया। अभियान के तहत लोगों को गाली-गलौच से दूर रहने का संकल्प दिलाया।

अभियान का आयोजन ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन के नीचे किया गया। अभियान में छोटे बच्चों से लेकर उम्रदराज तक शामिल हुए। बहुत से लोग हस्ताक्षर कर इस मुहिम का हिस्सा बने। समिति सदस्य ललिता ने बताया कि वेब सीरीज और सोशल मीडिया के प्रभाव से युवा पीढ़ी में गाली-गलौच को कूल मानने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह सामाजिक प्रदूषण को बढ़ावा देती है। कुसुम और गीता डेरोलिया ने कहा कि गालियां देना गलत बात है। वहीं, कर्नल अनिल जून और जयपाल सांगवान ने उदाहरण देते हुए बताया कि कई बार सार्वजनिक स्थानों पर लड़ाई झगड़े में गालियों का प्रयोग होता है। इस दौरान वहां से एकसाथ गुजर रहे अभिभावक-बच्चे खुद को असहज महसूस करते हैं। मनीष कुमार ने कहा कि इस रक्षाबंधन अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधते समय उनसे गाली-गलौच न करने और गाली मुक्त समाज के निर्माण का वचन लें। बहुत से लोगों ने इस अभियान की सराहना की।

किसान संघ ने ट्रंप के 50 फीसदी टैरिफ को बताया विनाशकारी

■ भारत सरकार ने दबाव में न आकर किसानों व उपभोक्ताओं के हित सुरक्षित किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। किसानों से जुड़े मुद्दों पर बात रखते साईं रेड्डी व छिकारा। फोटो :हरिभूमि

अखिल भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के साईं रेड्डी बहादुरगढ़ में पहुंचे। यहां उन्होंने भारतीय किसान संघ कार्यालय में किसानों से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार रखे।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए 50 फीसद टैरिफ को रेड्डी ने विनाशकारी बताया। साथ ही ये भी कहा कि भारत सरकार ने दबाव में न आकर किसानों व उपभोक्ताओं के हित सुरक्षित किए हैं। पत्रकार वार्ता में रेड्डी ने कहा कि अमेरिका ने पूर्व में जीएम बीजों को भारत में लाने का प्रयास किया था, जो कैंसर, हार्ट अटैक और नपुंसकता जैसी गंभीर बीमारियों के कारण बन सकते थे। भारतीय किसान संघ के आंदोलन के बाद केंद्र ने ऐसे बीजों पर रोक की घोषणा की। उन्होंने कहा कि नागपुर में हाल ही में हुई केंद्रीय प्रबंधन समिति की बैठक में दो प्रस्ताव पारित हुए हैं। पहला प्रस्ताव लैंड पुलिंग पॉलिसी में किसानों के हित सुरक्षित रखने की मांग तथा दूसरा प्रस्ताव गौ कृषि वाणिज्यम के तहत जैविक खेती को बढ़ावा देने की योजना रहा। हरियाणा के अध्यक्ष सतीश छिकारा ने बताया कि राज्य के सभी जिलों में चार चरणों में मॉडल तैयार होंगे। डाबोदा गांव से इसकी शुरुआत हो चुकी है। लंबे प्रयास के बाद दुधारू पशुओं के थनों को भी सरकारी बीमा योजना में शामिल करने की घोषणा कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने की है। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष धर्मवीर गुलिया, ब्लॉक अध्यक्ष वेद सिंह सुहाग, तरुण यादव, रामसिंह, नरेंद्र छिल्लर, विजय, हर्ष दलाल, सज्जन बेनीवाल सहित कई किसान नेता मौजूद रहे।

लोगों को स्मृति सभा का निमंत्रण दिया

बहादुरगढ़। सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया के जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड रामकिशन ने शनिवार को लाइनपार क्षेत्र की कालोनियों में जनसंपर्क अभियान चलाया। उन्होंने लोगों को पार्टी के संस्थापक महामंत्री और स्वतंत्रता सेनानी कॉमरेड शिवदास घोष की 49वीं बरसी पर सोनीपत में प्रस्तावित स्मृति सभा में शामिल होने का निमंत्रण दिया। कॉमरेड रामकिशन ने बताया कि शिवदास घोष युवावस्था में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अंग्रेजों की जेल में रहे। जेल में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के गहन अध्ययन के बाद उन्होंने महसूस किया कि देश में कोई सही क्रांतिकारी पार्टी नहीं है। फिर 1947 में आजादी के बाद भी किसानों, मजदूरों और मेहनतकश जनता का शोषण जारी रहा, जिसके खिलाफ 24 अप्रैल 1948 को उन्होंने एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की स्थापना की। उन्होंने कहा कि आज देश और दुनिया में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था संकट में है। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और निजीकरण की नीतियों से आम जनता परेशान है, जबकि देश की संपत्ति पर कुछ अमीरों का कब्जा बढ़ता जा रहा है। मजदूर और किसान कर्ज न चुका पाने की स्थिति में आत्महत्या करने को मजबूर हैं। रामकिशन ने आह्वान किया कि कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों पर चलकर ही शोषण आधारित व्यवस्था को बदलकर समाजवादी व्यवस्था स्थापित की जा सकती है।

अनुसंधानकर्ता बनने के लिए बी-वन परीक्षा आयोजित

■ जिले के महिला और पुरुष पुलिस के 181 जवानों ने हिस्सा लिया जिनमें से 43 कर्मचारियों ने परीक्षा पास की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। परीक्षा केंद्र का निरीक्षण करते हुए पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह।

पुलिस विभाग में सिपाही से मुख्य सिपाही के पद पर पदोन्नत होने के लिए विभागीय परीक्षा बी-वन का आयोजन किया जाता है। बी-वन परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जवानों को मधुबन में परीक्षण दिया जाता है। उसके बाद जवानों को मुख्य सिपाही के पद पर पदोन्नत किया जाता है। प्रवक्ता ने बताया कि शनिवार को गंगा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट कॉलेज कबलाना में बी-वन परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के महिला और पुरुष पुलिस के 181 जवानों ने हिस्सा लिया। जिनमें से 43 कर्मचारियों ने परीक्षा पास की। उन्होंने बताया कि पुलिस कमिश्नर डॉक्टर राजश्री सिंह ने परीक्षा के दौरान परीक्षा केंद्र का निरीक्षण किया और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान डीसीपी लोगेश कुमार, डीसीपी मानेसर दीपक जेवरिया, एसीपी अनिरुद्ध चौहान, एसीपी अखिल कुमार और अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे। परीक्षा को पास करने के बाद पुलिस लाइन में परेड का आयोजन किया गया। परेड के बाद परीक्षा पास करने वाले कर्मचारी का वेपन हैंडलिंग करवाया गया। उन्होंने बताया कि बी-वन परीक्षा कंप्यूटर पर आनलाइन एक विशेष साफ्टवेयर पर आयोजित की जाती है। जिसमें बहुविकल्पीय 140 प्रश्न आते है। जिनमें से पास होने के लिए 50 प्रतिशत नंबर होने आवश्यक है।

नई कार्यकारिणी के चुनाव को लेकर सीएमओ से मिली महिला स्वास्थ्य कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। सीएमओ को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए संगठन पदाधिकारी एवं सदस्य। फोटो :हरिभूमि

बहुउद्देशीय महिला स्वास्थ्य कर्मचारियों की बैठक में संगठन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गई। जिला प्रधान मनीषा ढाकला की अध्यक्षता में सीएमओ कार्यालय में हुई इस बैठक में विचार-विमर्श उपरांत नई जिला कार्यकारिणी के चुनाव को लेकर भी चर्चा की गई।

इस संबंध में एएनएम का एक शिष्ट मंडल ने सीएमओ डॉक्टर जयमाला से मिलकर चुनाव की सूचना देने हुए संगठन की विभिन्न समस्याओं से भी अवगत कराया। महिला स्वास्थ्य कर्मचारियों ने कहा कि यदि समय रहते उनकी समास्याओं का समाधान नहीं हुआ तो वे संघर्ष का रास्ता अपनाएंगी। इस मौके पर जिला सचिव स्वीटी नेहरा, सुदेश, पूनम, विजय कुमार, बुल्ली, राजमिला, नीलम, नीतू, निर्मला देवी, कृष्णा देवी, विनोद कुमारी, अनिता, सुनीता यादव, प्रीति, मनीषा, गायत्री देवी, शकुंतला, निशा, पूनम, कमलेश, कैलाश, कीर्ति व सुदेश बाला सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

स्पेशल गिरदावरी करवाते हुए किसानों को पचास हजार प्रति एकड़ मुआवजा दे सरकार : कादियान

जलभराव गंभीर समस्या, किसानों को हुआ भारी नुकसान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

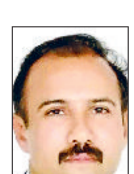

विक्रम कादियान, वरिष्ठ कांग्रेस नेता

■ गंदे पानी के कारण बीमारियां फैलने का डर सताने लगा

बेरी विधानसभा क्षेत्र में जलभराव के कारण लोगों का जीना मुहाल हो रखा है। रिहायशी क्षेत्रों से लेकर खेतों तक पानी भरा हुआ है। जिसके कारण लोग काफी परेशान है। लेकिन सरकार द्वारा जल निकासी के कोई पुख्ता इंतजाम नहीं किए जा रहे है। यह बात वरिष्ठ कांग्रेसी नेता विक्रम कादियान ने कही। उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि बेरी हलके को जल भराव प्रभावित क्षेत्र घोषित किया जाए और स्पेशल गिरदावरी करवाते हुए किसानों को पचास हजार प्रति एकड़ मुआवजा दिया जाए। उन्होंने कहा कि दूबलधन, माजरा, अच्छेज, पहाड़ीपुर, गोधड़ी, सफीपुर, मलिकपुर, मांगावास, बेरी, वजीरपुर, धौड़, डीघल, खरहर, मातन, छारा, छुड़ानी आदि गांवों में सरकार जल्द पानी निकासी का प्रबंध किया जाए। उन्होंने कहा कि दूबलधन में दादरी-बेरी मार्ग पर कई फुट पानी भरा हुआ है तथा रिहायशी क्षेत्रों में भी जलभराव के कारण लोग परेशान है। वहीं माजरा गांव की हरिजन बस्तियों में पानी भरा हुआ है और श्रदा की धर्मशाला के पास के मौहल्ले में भरे गंदे पानी के कारण बीमारियां फैलने का डर सताने लगा है। इसके अलावा खेल स्टेडियम, वाटर वर्क्स भी ओवर फ्लो है। निकासी मोटरें अभी पूर्णातया काम नहीं कर पा रही हैं। देवालय की निकासी पाइप जगह-जगह धंस गई है, वहीं कन्या स्कूल के पास निकासी पाइप रुकी पड़ी है। जिससे जल भराव विकराल रूप धारण करता जा रहा है। उन्होंने कहा कि बेरी दुजाना, छोछी, महराणा, मदाना व भापड़ौदा में जलभराव के कारण जन जीवन पूर्णतया प्रभावित हो गया है। जल भराव क्षेत्रों में अब तक बिजली पॉइंट नहीं बने है। ड्रैनेज व पाइपलाइन में गाद जमी हुई है,पाइप लाइनों की सफाई तक नहीं हुई। लेकिन प्रशासनिक स्तर पर इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जिसके कारण परेशानी आमजन और किसानों को हो रही है। उन्होंने जल भराव की स्थिति पर सरकार से श्वेत-पत्र जारी करने की मांग की है। उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि जल प्रभावित क्षेत्रों की स्पेशल गिरदावरी की जाए तथा किसानों को कम से कम पचास हजार प्रति एकड़ का मुआवजा दिया जाए। अगर प्रशासन और सरकार जल्द पानी निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं करती है तो उन्हें आंदोलन करने पर मजबूर होना पड़ेगा।

आईटीआई में पीएम रोजगार मेला कल

रेवाड़ी। प्रदेश में जिला गुरुग्राम के बाद जिला रेवाड़ी युवाओं को रोजगार प्रदान करता है। वर्ष 2024 में आईटीआई ने 10 हजार 200 से अधिक युवाओं को विभिन्न औद्योगिक कंपनियों में प्रशिक्षु व नियमित रूप में रोजगार उपलब्ध कराया है। आईटीआई के प्राचार्य सुनील कुमार यादव ने बताया कि संस्थान लगातार युवाओं के कल्याण के लिए रोजगार मेला और परिसर साक्षात्कार आयोजित कर रहा है। हरियाणा सरकार के रोजगार विभाग के निदेशालय के निर्देश पर 11 अगस्त को चौथा प्रधानमंत्री रोजगार मेला लगाया जा रहा है। इसके लिए पूरी तैयारी कर ली गई है। मेले में 2000 से अधिक तकनीकी अथवा गैर तकनीकी रिक्त पदों पर युवाओं के चयन की प्रक्रिया चलेगी। 40 से अधिक कंपनियों के प्रतिनिधि अधिकारी राजकीयऔद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में रिक्त पदों की योग्यता के अनुसार युवाओं को चुनेंगे।

NOTICE

I, JC-540134K Sub (Clk) (Hony Capt) Om Prakash, Retd S/o Late Sish Ram R/o Vill & PO - Kheri khummar, Teh and Distt - Jhajjar declare that my son name is Chirag in his 10th class mark sheet where as in my service record his name is Chirag Yadav. His correct name is Chirag only. He may be known as Chirag in future for all purposes.

खबर संक्षेप

झज्जर। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों के साथ उपस्थित सीजेएम विशाल।

चाय पर चर्चा कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों को किया जागरूक

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा सीजेएम एवं सचिव विशाल की अध्यक्षता में विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सेक्टर-6 के सीनियर सिटीजन क्लब में आयोजित चाय पर चर्चा कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान स्वास्थ्य और जागरुकता पर विशेष ध्यान दिया गया। सीजेएम विशाल ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अनमोल धरोहर हैं, जिनके अनुभव और आशीर्वाद से नई पीढ़ी दिशा पाती है। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का उद्देश्य न केवल कानूनी सहायता प्रदान करना है बल्कि वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों सम्मान और कल्याण को सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बुजुर्गों के मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने बताया कि नालसा हेल्पलाइन नंबर 15100 पर फोन करके नागरिक मुफ्त कानूनी सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

पेयजल पाइप लाइन में रिसाव, लोग नाराज

बहादुरगढ़। रेलवे रोड के निकट अग्रसेन पार्क के सामने मुख्य पेयजल पाइप में लंबे समय से लीकेज है, जिससे सप्लाई के दौरान पानी नाली में बहने के साथ घरों तक दूषित रूप में पहुंच रहा है। सतपाल हाड़ा ने कहा कि नेहरू पार्क और आसपास की कॉलोनियों में लोग उल्टी-दस्त जैसी बीमारियों से पीड़ित हैं। यह समस्या दो साल से बनी हुई है और एक्स के माध्यम से मुख्यमंत्री व जन स्वास्थ्य विभाग को अवगत कराया गया है। यह मार्ग सिविल अस्पताल और रेलवे रोड को जोड़ता है।

पद्म पुरस्कारों के लिए नामांकन की अंतिम तिथि 15 : उपायुक्त

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री के लिए नामांकन की अंतिम तिथि बढ़कर 15 अगस्त हो गई है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार आम नागरिक, संस्थाएं और संगठनों से ऑनलाइन नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नामांकन प्रक्रिया केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल के माध्यम से ही पूरी की जा सकती है। नामांकन करते समय आठ सौ शब्दों तक का एक प्रशस्ति-पत्र भी अनिवार्य रूप से देना होगा, जिसमें अनुशंसित व्यक्ति की विशिष्ट उपलब्धियों और समाज के प्रति योगदान का स्पष्ट विवरण हो।

बारिश के बावजूद बहनों का उत्साह नहीं हुआ कम

भाई की कलाई पर बांधा रक्षा सूत्र, लंबी उम्र की कामना

- दिनभर रहा उत्साह का माहौल,शहर की विभिन्न सड़कों पर बनी रही जाम की स्थिति
- निजी बस संचालकों की मनमानी के कारण लोगों में नाराजगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

झज्जर। भाई को रक्षासूत्र बांधते हुए बहनें तथा मेले में ऊंट की सवारी करते हुए बच्चे और झूलों पर झूलते हुए बच्चे व इंतजार करते अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

भाई बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन का पर्व जिले भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दिनभर होती रही हल्की बारिश के बावजूद बहनें अपने भाईयों के घरों पर पहुंची और भाईयों की कलाईयों पर रक्षा सूत्र बांधकर उनकी लंबी आयु की कामना की। वहीं भाईयों ने भी अपनी बहनों की रक्षा करने का वचन देते हुए सम्मान स्वरूप उपहार भेंट किए। रक्षा बंधन पर्व के चलते जहां दिनभर बाजारों में रौनक रही, वहीं बस स्टैड परिसर के बाहर अंबेडकर चौक, पुराना बस अड्डा रोड क्षेत्र में वाहनों की अधिक आवाजही के चलते जाम की स्थिति बनी रही। उधर, पर्व के चलते पुलिस के स्तर पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए। शहर के प्रमुख बाजारों, सड़कों व बस स्टैंड परिसर में पुलिस की टीमें निरंतर गश्त करती रही।

रोडवेज बसों में खूब रही भीड़: रक्षाबंधन पर्व पर रोडवेज की मुफ्त बस सेवा के चलते रोडवेज बसों में भारी भीड़ नजर आई। प्रदेश सरकार ने रक्षाबंधन से एक दिन पहले ही महिलाओं को रोडवेज बसों में मुफ्त यात्रा का तौहफा दिया जो रक्षाबंधन की रात 12 बजे तक रहेगा। बस स्टैंड पर रोडवेज बसों की कोई कमी दिखाई नहीं दी। यही कारण रहा कि बसों में महिलाएं आराम से यात्रा करती नजर आई। हालांकि ग्रामीण रूटों पर बसों की कमी के चलते महिलाओं को परेशानी भी हुई।

निजी बस संचालकों ने कूटी चांदी: उधर, सरकारी आदेशों का निजी बस संचालकों पर कोई असर दिखाई नहीं दिया। निजी बस संचालकों ने महिलाओं से किराया वसूल किया। वहीं महिलाओं द्वारा सरकारी आदेशों का हवाला देने पर बदसलूकी की गई और बस से नीचे उतारने की बात कही। त्यौहार के दिन देरी ना हो, इसके लिए महिलाएं किराया देने पर विवश रही।

गोगा पीर की छड़ी पहुंचने पर हुई मेले की शुरूआत : रक्षा बंधन का यह मेला गोगा पीर की छड़ी मेले में पहुंचने के बाद ही विधिवत रूप से शुरू होता है। इस क्षेत्र में गोगा पीर छड़ी जब डेरू व कटोरी की धुनों के साथ मेला परिसर पहुंची तो वहां आस्था स्वरूप श्रद्धालुओं ने अनाज, शक्कर, बतासे, धूप व दीप के साथ छड़ी के समक्ष माथा टेका व मन्नत मांगी। श्रद्धालुओं द्वारा माथा टेकने का यह सिलसिला भी देर शाम तक चला। भगत संदीप चंद्रा, रोहित कांगड़ा, लव भटनागर व गोगा पीर की छड़ी के घोड़े के रूप सेवाएं दे रहा कुलदीप मेले की समाप्ति तक छड़ी की सुरक्षा में तैनात रहे।

ऊंट की सवारी रही आकर्षण का केंद्र : तीज मेले में जहां विभिन्न प्रकार के झूले लगे थे वहीं अबकी बार ऊंट की सवारी आकर्षण का केंद्र रही। अभिभावकों ने अपने बच्चों को ऊंट की सवारी कराई। ऊंट मालिक द्वारा बच्चों को ऊपर चढ़ाने व उतारने के लिए एक सीढ़ी गई थी। जिसके माध्यम से बच्चों को ऊपर बिठाया जाता। इसके बाद मेले का एक चक्कर लगाने के बाद बच्चों को नीचे उतार दिया जाता। इसके अलावा लाइटिंग वाले सींगों ने भी बच्चों का ध्यान आकर्षित कराया।

मेले में बच्चों ने झूलों और ऊंट सवारी का लिया आनंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

- बीननुमा वाद्ययंत्र, गुब्बारों व खिलौनों की खरीददारी

सावन माह के अंतिम दिन रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में शहर की धानक धर्मशाला से यादव धर्मशाला चौक तक की सड़क पर मेले का आयोजन किया गया। मेले में दुकान व फड़ लगाने वाले दुकानदारों ने एक दिन पहले से ही इस रोड के दोनों तरफ अपनी स्टॉल सजानी शुरू कर दी थीं। पहले दिन लगाई गई फिरकी वाली स्टालों से भी लोगों द्वारा खरीददारी की गई। मेले के दौरान लोगों ने अपने बच्चों को बीननुमा वाद्ययंत्र, गुब्बारों व खिलौनों की खरीददारी कराई। आकर्षक झूलों पर भी लोगों की खासी भीड़ देखने को मिली। दोपहर करीब तीन बजे से शुरू हुआ यह मेला पुलिस सुरक्षा प्रबंध न होने के कारण बेतरतीब रहा। दोनों ओर लगाई गई स्टॉलों के बीच से छोटे-बड़े वाहन गुजरते रहे। ऐसे में बच्चों के दुर्घटनाग्रस्त होने का भय भी अभिभावकों में दिखाई दिया। करीब छह बजे पुलिस प्रशासन ने मेले की सुध लेते हुए वाहनों का रूट डायवर्ट कराया। उसके बाद मेले में भीड़ और बढ़ गई।

बहादुरगढ़। पेड़, पौधों को राखी बांधने पहुंचे ट्रस्ट के सदस्य व बच्चे।

राखी बांधकर पेड़ों के संरक्षण का संकल्प लिया

बहादुरगढ़। रक्षा बंधन के अवसर पर क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट ने एक अनोखी और प्रेरणादायक पहल की। इस त्योहार को नई दिशा देते हुए ट्रस्ट के सदस्यों ने चिरंजीव पार्क व अन्य जगहों पर पेड़ों को राखी बांधी और उनकी सुरक्षा व देखभाल का संकल्प लिया। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि यह कदम पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित करने के लिए उठाया गया है। जिस तरह राखी भाई-बहन के रिश्ते में प्रेम और जिम्मेदारी का भाव जगाती है, उसी तरह पेड़ों को राखी बांधना हमें प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी का अहसास कराता है। कार्यक्रम में स्थानीय बच्चों और महिलाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मौके पर पेड़ काटने से बचाने, नए पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संदेश दिया गया। पर्यावरण प्रेमियों ने कहा कि यदि हर व्यक्ति अपने आस-पास के पेड़ों को परिवार का हिस्सा मानकर उनकी रक्षा का संकल्प ले तो हरियाली और स्वच्छ हवा सुनिश्चित की जा सकती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे त्योहारों को केवल पारंपरिक तरीके से न मनाएं, बल्कि उनमें समाज और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी जोड़ें।

उमंग-उत्साह के साथ मनाया रक्षाबंधन

बहादुरगढ़। राखी बांधने के बाद अपने भाई का मुंह मीठा कराती मायरा व नायरा तथा भाई को राखी बांधती बहनें।

बहादुरगढ़। भाई-बहन के अटूट प्रेम व स्नेह का पर्व रक्षाबंधन इलाके में हर्षोल्लास और पारंपरिक उमंग के साथ मनाया गया। सुबह से ही शहर और आसपास के गांवों में इस पवित्र त्योहार की रौनक बिखर गई। बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनके सुख, समृद्धि और दीर्घायु की कामना की। वहीं भाइयों ने बहनों की रक्षा का संकल्प लेते हुए उन्हें उपहार भेंट किए। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, मेट्रो स्टेशनों पर शनिवार को काफी भीड़भाड़ देखने को मिली। बरसात खत्म होने के बाद बाजारों में भी खूब रौनक हुई। मिठाई की दुकानों पर लंबी कतारें और राखी-गिफ्ट की दुकानों पर जमकर खरीदारी होती रही। रंग-बिरंगी राखियां, खूबसूरत गिफ्ट पैक व मिठाइयों की महक ने त्योहार के माहौल को और भी खुशनुमा बना दिया। नन्हे-नन्हे बच्चों में भी उत्साह चरम पर रहा। नन्ही बच्चियों ने भाइयों को राखी बांधकर मुंह मीठा कराया और ढेर सारी शुभकामनाएं दीं। वहीं, शहर के कई इलाकों में लगे मेलों में शाम के वक्त रौनक जम गई।

झज्जर। महंत राजेंद्र दास के साथ हाथों में पौधे लिए हुए श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

पौधारोपण के साथ पेड़ों को राखी बांध कर मनाया रक्षाबंधन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

पूर्णिमा एवं रक्षा बंधन के पावन अवसर पर तपोभूमि जटेला धाम माजरा दूबलधन में स्वामी नितानंत महाराज की ब्रह्मवाणी, एक साथ 25 अखंड पाठ, विशाल सत्संग एवं भंडारे का आयोजन किया गया। सत्संग में महंत राजेंद्र दास ने संगत को संबोधित करते हुए कहा कि भारत देश विविधताओं एवं विभिन्न परंपराओं के साथ ही अलग-अलग रीति-रिवाज, वेषभूषा, खान-पान व रहन-सहन के बावजूद एकता और अखंडता का बड़ा प्रतीक है। देश में वर्ष भर तीज-त्योहारों का आगमन होता रहता है।

भारत के अतिरिक्त विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है, जहां वर्षभर त्यौहार मनाए जाते हों। उन्होंने कहा कि मनुष्यों को बाहरी दिखावे और आडंबरों का त्याग कर निरंतर और निरंकार भाव से केवल प्रभु नाम का सिमरण करना चाहिए। कार्यक्रम में साध संगत के साथ आई छोटी बालिकाओं ने स्वामी नितानंद महाराज की प्रतिमा के समक्ष प्रज्ज्वलित किया तथा महंत राजेंद्र दास महाराज को राखी बांधते हुए उनका आशीर्वाद भी लिया। इसके अलावा साध संगत द्वारा पेड़ों को राखी बांध कर भी रक्षा बंधन मनाया गया।

24 अगस्त को मनाया जाएगा स्वामी नितानंद का 226वां निर्वाण दिवस

महंत राजेंद्र दास ने बताया कि आगामी 24 अगस्त को स्वामी नितानंद महाराज के 226वें निर्वाण दिवस पर तपोभूमि जटेला धाम में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति और ऋषि-मुनियों ने तुलसी के पौधे को शुभ और लाभदायक माना है। इसलिए कार्यक्रम में स्वामी नितानंद मिशन फाउंडेशन के द्वारा 51 हजार तुलसी के पौधे साध-संगत में वितरित किए जाएंगे।

बहादुरगढ़। श्रावणी पर्व पर आयोजित किया गया यज्ञ। फोटो : हरिभूमि

गुरुकुल में हर्षोल्लास से मनाया श्रावणी पर्व

बहादुरगढ़। केंद्रीय आर्य सभा बहादुरगढ़ की ओर से कन्या गुरुकुल लोवा कलां में शनिवार को श्रावणी पर्व (रक्षाबंधन) हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में गुरुकुल की प्रधानाचार्या डॉ. राजन मान ने नवागंतुक छात्राओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। इसी के साथ गुरुकुल में संस्कृत सप्ताह समारोह का भी शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर छात्राओं ने प्रतिभा आर्या के नेतृत्व में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। यज्ञ ब्रह्मा की भूमिका डॉ. राजन मान ने निभाई। समारोह में केंद्रीय आर्य सभा जिलाध्यक्ष हरिओउम दलाल, राजेश राठी, संजय आर्य, बिजेंद्र खोखर सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन का आध्यात्मिक महत्व बताया

बहादुरगढ़। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अग्रवाल कॉलोनी स्थित सेवा केंद्र पर रक्षाबंधन का पावन पर्व उत्साह और आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। सेवा केंद्र संचालिका बीके अंजलि ने रक्षाबंधन का गहन आध्यात्मिक अर्थ समझाते हुए कहा कि यह केवल एक पारंपरिक त्योहार नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धता, पवित्रता और ईश्वरीय संरक्षण का प्रतीक है। बीके विनीता ने परमात्मा के श्रेष्ठ महावाक्य सुनाकर सभी को आत्मिक शक्ति एवं प्रेरणा प्रदान की। वहीं बीके रेणु व अमृता ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए जीवन में पवित्र संकल्प धारण करने का संदेश दिया। कार्यक्रम में नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी और सामाजिक कार्यकर्ता रमेश राठी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

अशोक नगर की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान : राठी

बहादुरगढ़। पाइप लाइन डलने के बाद अशोक नगर का दौरा करने पहुंची चेयरपर्सन। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

वर्षों से सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या से जूझ रहे वार्ड 20 के अशोक नगर के निवासियों को अब राहत की सांस मिली है। यहां नई पाइप लाइन डाली गई है।

दरअसल, अशोक नगर की गलियों में लंबे समय से सीवर ओवरफ्लो के कारण गंदा पानी भरा रहता था, जिससे लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता था। स्थानीय निवासियों ने क्षेत्र के दौरे पर आईं चेयरपर्सन सरोज राठी से इस समस्या के समाधान की गुहार लगाई थी।

समस्या को गंभीरता से लेते हुए चेयरपर्सन ने अधिकारियों को निर्देश जारी किए और पाइपलाइन बदलने का कार्य शुरू करवाया। अब नई पाइपलाइन बिछ जाने से सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या पूरी तरह समाप्त हो गई है। अशोक नगर के लोगों ने इस समस्या से मुक्ति दिलाने पर चेयरपर्सन सरोज राठी का आभार व्यक्त किया।

चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि नगर परिषद के माध्यम से शहरवासियों की समस्याओं का समाधान करना और उन्हें बेहतर से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना ही मेरी पहली प्राथमिकता है।

निलोठी में हुआ धार्मिक आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून का सम्मान करते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

गांव निलोठी स्थित सिद्ध बाबा मंगलनाथ मंदिर परिसर में शनिवार को भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विधायक राजेश जून ने विशेष रूप से शिरकत की। भंडारे में पहुंचने पर मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों व ग्रामवासियों ने विधायक राजेश जून का फूल मालाए पहनाकर जोरदार स्वागत किया।

विधायक राजेश जून ने भंडारे में शिरकत करते हुए 11 हजार रुपए का मंदिर में दान दिया। विधायक राजेश जून ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया और श्रद्धालुओं से बातचीत की। विधायक ने कहा कि भंडारे जैसे धार्मिक आयोजन न केवल आस्था को मजबूती देते हैं, बल्कि समाज में आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना को भी प्रबल करते हैं। विधायक राजेश जून ने महंत दर्शन गिरी से आशीर्वाद लिया और सिद्ध बाबा मंगलनाथ से क्षेत्र की खुशहाली की कामना की।

स्वदेशी उत्पादों की खरीद और बिक्री राष्ट्र की सच्ची सेवा : पूनिया

झज्जर। स्वदेशी उत्पादों की खरीद और बिक्री राष्ट्र की सच्ची सेवा है। 1991 में स्थापना के बाद से ही स्वदेशी जागरण मंच स्वदेशी अपनाने के लिए जनता में जागरूकता पैदा करने के अभियान में जुटा है। मंच का दृढ़ विश्वास है कि हमारा राष्ट्र स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के आधार पर ही समृद्ध हो सकता है। यह बात स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत संगठक कुलदीप पूनिया ने शनिवार को पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाऊस में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि नौ अगस्त से विदेशी कंपनियों भारत छोड़ो व विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का अभियान मंच ने शुरू किया है। इसी कड़ी में सोमवार को सुबह दस बजे विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

झज्जर। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत संगठक कुलदीप पुनिया।

आवरण कथा
ओम निश्चल

79वां स्वतंत्रता दिवस
आजादी की फलश्रुति

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है-*यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है-
तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हम: यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्य: इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिका: हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर
हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

ढाई शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श पर: हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्ष: जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगे: साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रम: 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियां: हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी
स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनमा की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

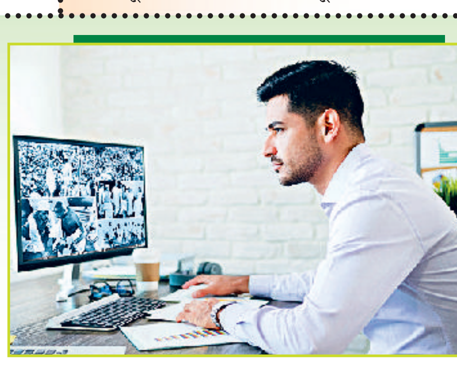

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनिया: हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैली: हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्व: मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाब: नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताब: अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखक:** संतोष भदौरिया, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

कहानी

आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

नया दौर

लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

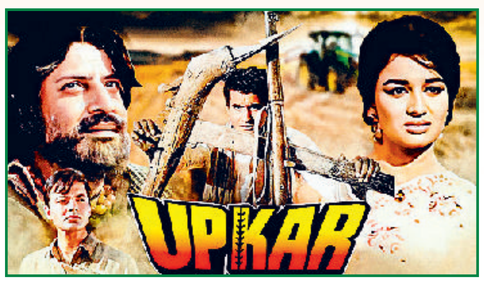

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *